Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 5

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून , 2011

एम.एच.डी.-4 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. ***किन्हीं तीन*** को संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। 3x12=36

(क) भारत समग्र विश्व का है, और सम्पूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम-पाश में आबद्ध है। अनादि काल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति वह विकीर्ण कर रहा है। वंसुधरा का हृदय-भारत- किस मूर्ख को प्यारा नहीं? तुम देखते नहीं कि विश्व का सबसे ऊँचा शृंग इसके सिरहाने, और गंभीर तथा विशाल समुद्र इसके चरणों के नीचे है? एक-से-एक सुन्दर दृश्य प्रकृति ने अपने इस घर में चित्रित कर रखा है। भारत के कल्याण के लिए मेरा सर्वस्व अर्पित है।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) मैं ने कहा था, यह नाटक भी मेरी तरह अनिश्चित है। उसका कारण भी यही है कि मैं इसमें हूँ और मेरे होने से ही सब कुछ इसमें निर्धारित या अनिर्धारित है। एक विशेष परिवार उसकी विशेष परिस्थितियाँ! परिवार दूसरा होने से परिस्थितियाँ बदल जाती, मैं वही रहता। इसी तरह सब कुछ निर्धारित करता । इस परिवार की स्त्री के स्थान पर कोई दूसरी स्त्री किसी दूसरी तरह से मुझे झेलती या वह स्त्री मेरी भूमिका ले लेती और मैं उसकी भूमिका लेकर उसे झेलता। नाटक अंत तक फिर भी इतना ही कठिन होता कि इसमें मुख्य भूमिका किसकी थी – मेरी, उस स्त्री की, परिस्थितियों की, या तीनों के बीच से उठते कुछ सवालों की।

(ग) धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडम्बर मात्र, मैंने यह बार-बार देखा था। निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा व्यर्थ सिद्ध होते आए हैं सदा हम सब के मन में कहीं एक अंध गह्वर है।

बर्बर पशु, अंधा पशु वास वहीं करता है, स्वामी जो हमारे विवेक का, नैतिकता, मर्यादा, अनासक्ति, कृष्णार्पण यह सब हैं अंधी प्रवृत्तियों की पोशाकें जिनमें फटे कपड़ों की आँखें सिली रहती हैं। मुझको इस झूठे आडम्बर से नफरत थी। इसलिए स्वेच्छा से मैंने इन आँखों पर पट्टी चढ़ा रखी थी।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(घ) प्रेम का प्रभाव एकांत भी होता है और लोक-जीवन के नाना क्षेत्रों में भी दिखाई पड़ता है। एकांत प्रभाव उस अंतर्मुख प्रेम में देखा जाता है जो प्रेमी को लोक के कार्यक्षेत्र से खींचकर केवल दो प्राणियों के एक छोटे से संसार में बंद कर देता है। उसका उठना-बैठना, चलना-फिरना, मरना-जीना, सब उसी के घेरे के भीतर होता है। वह उस घेरे के बाहर कोई प्रभाव उत्पन्न करने के उद्देश्य से कुछ भी नहीं करता। उसमें जो साहस, धीरता, दृढ़ता, कष्टसहिष्णुता आदि दिखाई देती है वह प्रेम-मार्ग के बीच प्रेमोन्याद के रूप में, लोक के बीच कर्त्तव्य के रूप में नहीं।

(ङ) सामंती व्यवस्था के ह्रास के साथ भारत की आधुनिक भाषाओं का उत्थान जुड़ा हुआ है। ये भाषाएँ सामंती व्यवस्था के ह्रास के कारण पैदा नहीं हुई, भाषाएँ पहले से थीं, उन्हें अब अपने प्रसार और विकास का अवसर मिला। संस्कृत जहाँ धर्म और साहित्य की भाषा थी, फारसी जहाँ राजभाषा थी, वहाँ उत्तर भारत के संत कवि बोलचाल की भाषाओं को माध्यम बनाकर आगे बढ़े। संस्कृत या फारसी की जगह अनेक भाषाओं के विकास से भारत की एकता टूटी नहीं, वह और दृढ़ हुई क्योंकि जनता की शिक्षा और उसका सांस्कृतिक विकास उसकी भाषा द्वारा ही संभव है। सुशिक्षित और सुसंस्कृत जनता ही एकता का सबसे बड़ा आधार है। इसीलिए जो लोग अँग्रेजी द्वारा भारत की एकता बनाए रखना चाहते हैं, वे एकता के दृढ़ आधार को नहीं समझते, वे जनता की शक्ति को नहीं पहचानते।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

2. रंगमंच को दृष्टि में रखते हुए अंधेर नगरी का मूल्यांकन कीजिए। 16

3. 'ऐतिहासिक नाटकों के माध्यम से जयशंकर प्रसाद अपने समय के राष्ट्रीय-सामाजिक संदर्भों को प्रस्तुत कर रहे थे।' स्कंदगुप्त नाटक को ध्यान में रखते हुए इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

4. मोहन राकेश की नाट्य-रचना की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16

5. ''अंधायुग' महाभारत कथा के माध्यम से आधुनिक जीवन की विडम्बनाओं को चित्रित करता है।'' तार्किक विवेचन कीजिए। 16

6. एब्सर्ड नाटक की विशेषताओं के संदर्भ में ताँबे के कीड़े का विवेचन कीजिए। 16

7. 'तीसरे दर्जे का श्रध्देय' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? स्पष्ट कीजिए। 16

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

8. हजारीप्रसाद द्विवेदी की निबंध शैली की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16

9. 'हिन्दी जीवनी साहित्य में 'कलम का सिपाही' एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है।' इस कथन की समीक्षा कीजिए। 16

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

10. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणी लिखिए। 8x2=16

(क) ठकुरी बाबा

(ख) नुक्कड़ नाटक 'औरत'

(ग) रिपोर्ताज

(घ) कवि और कला चिंतक ऑक्टेवियो पॉज

ignou
ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : **4**

एम.एच.डी.-4

03174

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसंबर, 2011

एम.एच.डी.-4 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न **अनिवार्य** है। शेष **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. ***किन्हीं तीन*** को सदर्भ सहित व्याख्या कीजिए। **3x12=36**

(क) ऐसा जीवन तो विड़म्बना है, जिसके लिए रात-दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद-शशि का विलास हो, तब भी दाँत-पर-दाँत रखे मुट्ठियों को बाँधे-लाल आँखों से एक-दूसरे को घूरा करें! बसंत के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहा कर लाल कर दिया जाय! नहीं-नहीं चक्र! मेरी समझ में मानव जीवन का यही उद्देश्य नहीं है। कोई और भी निगूढ़ रहस्य है चाहे मैं उसे न जान सका हूँ।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) मैं ने कहा था, यह नाटक भी मेरी तरह अनिश्चित है। उसका कारण भी यही है कि मैं इसमें हूँ और मेरे होने से ही सब कुछ इसमें निर्धारित या अनिर्धारित है। एक विशेष परिवार उसकी विशेष परिस्थितियाँ! परिवार दूसरा होन से परिस्थितियाँ बदल जातीं, मैं वही रहता। इसी तरह सब कुछ निर्धारित करता। इस परिवार की स्त्री के स्थान पर कोई दूसरी स्त्री किसी दूसरी तरह से मुझको झेलती या वह स्त्री मेरी भूमिका ले लेती और मैं उसकी भूमिका लेकर उसे झेलता। नाटक अंत तक फिर भी इतना ही कठिन होता कि इसमें मुख्य भूमिका किसकी थी-मेरी, उस स्त्री की, परिस्थीतियों की, या तीनों के बीच से उठते कुछ सवालों की।

(ग) सारे तुम्हारे कर्मों का पाप-पुण्य योगक्षेम मैं वहन करूंगा
अपने कंधो पर अट्ठारह दिन के इस भीषण संग्राम में
कोई नहीं केवल मैं ही मरा हूँ करोड़ों बार जितनी बार जो
भी सैनिक भूमिशायी हुआ
कोई नहीं था
वह मैं ही था
गिरता था घायल होकर जो रणभूमि में। अश्वत्थामा के
अंगों से
रक्त, पीप, स्वेद बन कर बहूँगा
मैं ही युग-युगांतर तक
जीवन हूँ मैं
तो मृत्यु भी तो मैं ही हूँ माँ!
शाप यह तुम्हारा स्वीकार हैं।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(घ) प्रेम का प्रभाव एकांत भी होता है और लोक जीवन के नाना क्षेत्रों में भी दिखाई पड़ता है। एकांत प्रभाव उस अंतर्मुख प्रेम में देखा जाता है जो प्रेमी को लोक के कर्मक्षेत्र से खींच कर केवल दो प्राणियों के एक छोटे से संसार में बंद कर देता है। उसका उठना-बैठना, चलना-फिरना, मरना-जीना सब उसी घेरे के भीतर होता है। वह उस घेरे के बाहर कोई प्रभाव उत्पन्न करने के उदेश्य से कुछ भी नहीं करता उसमें जो साहस, धीरता, कष्ट-सहिष्णुता आदि दिखाई देती है वह प्रेम मार्ग के बीच प्रेमोन्माद के रूप में, लोक के बीच कर्तव्य के रूप में नहीं।

(ङ) अब भी 'राम की शक्तिपूजा' अथवा निराला के अनेक गीत बार-बार पढ़ता हूँ, लेकिन तुलसीदास जब-जब पढ़ने बैठता हूँ तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मेरे सामने खुलता है, उससे भी विलक्षण बात यह है कि वह संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में घटित होता हुआ दीखता है। मैं मानो संसार का एक स्थिर चित्र नहीं बल्कि एक जीवंत चित्र देख रहा होता हूँ। ऐसी रचनाएँ तो कई होती हैं जिनमें एक रसिक हृदय बोलता है। बिरली ही रचना ऐसी होती है जिसमें एक सांस्कृतिक चेतना सर्जनात्मक रूप में अवतरित हुई हो। 'तुलसीदास' मेरी समझ में ऐसी ही एक रचना है।

2. 'अंधेर नगरी' नाटक में व्यक्त व्यंग्य और विड़म्बना को निरूपित करते हुए आज के जमाने में उसका महत्व स्थापित कीजिए। 16

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

3. रंगमंच और अभिनेयता की दृष्टि से स्कंदगुप्त नाटक की समीक्षा कीजिए। 16

4. 'आधे अधूरे' की नाट्यगत विशेषताओं पर प्रकाश डालिए। 16

5. 'अंधायुग' मिथकीय आख्यान को आधुनिक जीवन संदर्भों में किस रूप में और किस सीमा तक अभिव्यक्त करने में सफल हुआ है? सोदाहरण उत्तर दीजिए। 16

6. नुक्कड़ नाटक की विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 'औरत' की समीक्षा कीजिए। 16

7. ललित निबंध के रूप में 'कुटज' का मूल्यांकन कीजिए। 16

8. ''कलम का सिपाही' में व्यक्ति और युग का अनुठा संयोजन हुआ है।' इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं- अपना मत व्यक्त कीजिए। 16

9. यात्रा वृत्तांत की विशिष्टताएँ बताते हुए इस साहित्य विधा में राहुल जी के योगदान पर प्रकाश डालिए। 16

10. ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणी लिखिए : 16

(क) प्रताप नारायण मिश्र

(ख) रिपोर्ताज

(ग) राम चंद्र शुक्ल

(घ) ऑक्टोवियो पॉज

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

00384

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.एच.डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2012

एम.एच.डी.-4 : नाटक एवं अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है। शेष* ***किन्हीं चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. किन्हीं **तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : **3x12=36**

(क) भारत समग्र विश्व का है, और संपूर्ण वसुन्धरा इसके प्रेम पाश में आबद्ध है। अनादिकाल से ज्ञान की, मानवता की ज्योति वह विकीर्ण कर रहा है। वसुन्धरा का हृदय-भारत-किस मूर्ख को प्यारा नहीं है? तुम देखते नहीं कि विश्व का सबसे ऊँचा शृंग इसके सिरहाने, और गंभीर तथा विशाल समुद्र इसके चरणों के नीचे है? एक-से-एक सुन्दर दृश्य प्रकृति ने अपने इस घर में चित्रित कर रखा है। भारत के कल्याण के लिए मेरा सर्वस्व अर्पित है।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) मैं यहाँ थी, तो मुझे कई बार लगता था कि मैं घर में नहीं चिड़ियाघर के एक पिंजरे में रहती हूँ जहाँ ..... आप शायद सोच भी नहीं सकते कि क्या-क्या होता रहा है यहाँ। डैडी का चीखते हुए ममा के कपड़े तार-तार कर देना .... उनके मुँह पर पट्टी बाँध कर उन्हें बंद कमरे में पीटना ..... खींचते हुए गुसलखाने में कमोड पर ले जा कर ..... (सिहरकर) मैं तो बयान भी नहीं कर सकती कि कितने-कितने भयानक दृश्य देखें हैं इस घर में मैंने। कोई भी बाहर का आदमी उस सबको देखता-जानता, तो यही कहता कि क्यों नहीं बहुत पहले ही ये लोग ..... ?

(ग) धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडम्बर मात्र, मैंने यह बार-बार देखा था। निर्णय के क्षण में विवेक और व्यर्थ सिद्ध होते आए हैं सदा हम सब के मन में कहीं एक अंध गहवर है। बर्बर पशु, अंधा पशु वास वहीं करता है, स्वामी जो हमारे विवेक का, नैतिकता, मर्यादा, अनासक्ति, कृष्णार्पण यह सब हैं अंधी प्रवृत्तियों की पोशाकें जिनमें कटे कपड़ों की आँखे सिली रहती हैं। मुझको इस झूठे आडम्बर से नफरत थी इसलिए स्वेच्छा से मैंने इन आँखों पर पट्टी चढ़ा रखी थी।

(घ) रसखान तो किसी की ''लकुटी अरु कामरिया'' पर तीनों पुरों का राजसिंहासन तक त्यागने को तैयार थे पर

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

देश प्रेम की दुहाई देने वालों में से कितने अपने किसी थके माँदे भाई के फटे पुराने कपड़ों और धूल भरे पैरों पर रींझ कर, या कम से कम न खीज कर, बीना मन मैला किए कमरे की फर्श भी मैली होने देंगे? मोटे आदमियों तुम जरा सा दुबले हो जाते-अपने अंदेशे से ही सही तो, न जाने कितनी ठटरियों पर माँस चढ़ जाता।

(ङ) इसका मुख्य कारण यह है कि ये ब्रिटेन और अमेरिका को ही पश्चिम, बल्कि काफी हद तक संसार मान कर चलते हैं। और अमेरिका और इंग्लैंड उनकी प्रेरणाओं के केन्द्र बन गए हैं जब कि यह बात मुझे अजीब लगती है कि भारतीय समाज, जिसकी परम्पराएँ क्लासिक परपराएँ हैं, ब्रिटेन और अमेरिका के साहित्य के साथ अपना रिश्ता कैसे कायम कर सकता है, जिसकी परम्पराएँ एंटी-क्लासिक हैं। इंग्लैंड ने अपने सबसे बड़े जीनियस शेक्सपियर के रूप में भी इक्सेण्ट्रिक पैदा किया, दाँते जैसा क्लैसिस्ट नहीं। अंग्रेजी साहित्य में मिल्टन है, मगर सर्वान्तीज नहीं। यह सही है कि भारत में भी खजुराहो जैसी धुरी से खिसक कर एक अलग ही दुनिया में निकल आई अपूर्व कलाएँ हैं। लेकिन भारतीय साहित्य की परम्पराएँ केन्द्रीय हैं और मेरा निश्चित मत है कि अमेरिका और इंगलैंड का उत्केन्द्रित साहित्य उसका आदर्श नहीं हो सकता।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

2. भारतेन्दु की नाट्य-दृष्टि की समीक्षा कीजिए। 16

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक को ध्यान में रखते हुए प्रसाद की नाट्यकला की रंगमंचीय दृष्टि से आलोचना कीजिए। 16

4. हिंदी नाटक और रंगमंच को मोहन राकेश के अवदान पर प्रकाश डालिए। 16

5. काव्य-नाटक के रूप में अंधायुग का मूल्यांकन कीजिए। 16

6. भाषा और शैली की दृष्टि से 'धोखा' का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 16

7. 'कुटज' निबंध के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है? सोदाहरण उल्लेख कीजिए। 16

8. व्यंग्य निबंध की विशेषताओं की दृष्टि से परसाई जी के निबंध 'तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' का विवेचन कीजिए। 16

9. निराला की वेदना किन बिन्दुओं पर छायावादी वेदनानुभूति से अलग है? 'वसंत का अग्रदूत' संस्मरण के आधार पर स्पष्ट कीजिए। 16

www.ignouassignmentguru.com

10. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : 8x2=16

(क) नुक्कड़ नाटक

(ख) बच्चन की आत्मकथा

(ग) 'संस्कृति और जातीयता' शीर्षक निबंध

(घ) ठकुरी बाबा

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : **4**

एम.एच.डी.-4

06735

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2012

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है। शेष* ***किन्हीं चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. किन्हीं तीन की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 3x12=36

(क) धर्म अधर्म एक दरसाई ।
राजा करे सो न्याव सदाई ।।
भीतर स्वाहा बाहर सादे ।
राज करहि अगले अरु प्यारे ।।
अंधाधुंध मच्यौ सब देसा ।
मानहुँ राजा रहत विदेसा ।।
गो द्विज श्रुति आदर नहीं होई ।
मानहुँ नृपति विधर्मी कोई ।।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) मैं दो बड़े पहियों के बीच लगा हुआ
एक छोटा निरर्थक शोभा -चक्र हूँ
जो बड़े पहियों के साथ घूमता है
पर रथ को आगे नहीं बढ़ाता
और न धरती ही छू पाता है!
और जिसके जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है
कि वह धुरी से उतर नहीं सकता!

(ग) हर -एक के पास एक -न -एक वजह होती है । इसने इसलिए कहा था । उसने उसलिए कहा था। मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी क्या यही हैसियत है इस घर में कि जो जब जिस वजह से जो भी कह दे मैं चुपचाप सुन लिया करूँ । हर वक्त की धतकार, हर वक्त की कोंच , बस यही कमाई है यहाँ मेरी इतने सालों की ?

(घ) और रूप की तो बात ही क्या है! बलिहारी है इस मादक शोभा की । चारों ओर कुपित यमराज के दारूण नि:श्वास के समान धधकती लू में वह हरा भी है और भरा भी है , दुर्जन के चित्त से भी अधिक कठोर पाषाण की कारा में रुद्ध अज्ञात जल स्त्रोत से बरबस रस खींचकर सरस बना हुआ है।

(ङ) ठकुरी बाबा को देने में एक विशेष प्रकार की आनंदानुभूति होती है, इसी से वे स्वयं पूछ -पूछकर इस विनिमय व्यापार को शिथिल होने नहीं देते । वे भावुक और विश्वासी जीव हैं । चिकारा हाथ में लेते ही उनके लिए संसार का

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

अर्थ बदल जाता है । उनकी उदारता , सहज सौहार्द , सरल भावुकता आदि गुण ग्रामीण जीवन के लक्षण होने पर भी अब वहाँ सुलभ नहीं रहे । वास्तव में गाँव का जीवन इतना उत्पीड़ित और दुर्वह होता जा रहा है कि उसमें मनुष्यता को विकास के लिए अवकाश मिलना ही कठिन है ।

2. रंगमचीय विशेषताओं को ध्यान में रखते हुए 'अंधेर नगरी' का मूल्यांकन कीजिए । 16

3. 'स्कन्दगुप्त' नाटक के आधार पर स्कन्दगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । 16

4. 'आधे-अधूरे' में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन के अंतर्विरोधों और विडंबनाओं पर प्रकाश डालिए । 16

5. 'अंधायुग' पर अस्तित्ववादी जीवन -दर्शन के प्रभाव की समीक्षा कीजिए । 16

6. 'लोभ और प्रीति' निबंध के आधार पर रामचंद्र शुक्ल के भाव और मनोविकार संबंधी निबंधों की विशेषताएँ बताइए । 16

7. 'संस्कृति और जातीयता' में व्यक्त विचारों का विवेचन प्रस्तुत कीजिए । 16

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

8. संस्मरण विधा के महत्त्व का उल्लेख करते हुए 'वसंत का अग्रदूत' की विशेषताएँ बताइए । **16**

9. बच्चन की आत्मकथा का आत्मकथा विधा की दृष्टि से मूल्यांकन कीजिए । **16**

10. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणी लिखिए : **8x2=16**

(क) 'कलम का सिपाही' की भाषा

(ख) यात्रा वृतांत

(ग) 'ताँबे के कीड़े' की प्रतीकात्मकता

(घ) 'तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' का प्रतिपाद्य

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : **4**

एम.एच.डी.-4

05848

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2013

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है। शेष* ***किन्हीं चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. ***किन्हीं तीन*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 12x3=36

(क) सभी धर्म, समय और देश की स्थिति के अनुसार विवृत्त होते रहे हैं और होंगे। हम लोगों को हठधर्मिता से उन आगंतुक क्रमिक पूर्णता प्राप्त करने वाले ज्ञानों से मुँह न फेरना चाहिए। हम लोग एक ही मूल धर्म की दो शाखाएँ हैं। आओ, हम दोनों विचार के फूलों से दुख-दग्ध मानवों का कठोरपन्न कोमल करें।

(ख) इसलिए कि आज वह अपने को बिल्कुल बेसहारा समझता है। उसके मन में यह विश्वास बिठा दिया है तुमने कि सब कुछ होने पर भी उसके लिए जिंदगी में तुम्हारे सिवा कोई चारा, कोई उपाय नहीं। और ऐसा इसलिए नहीं किया तुमने कि जिंदगी में और कुछ हासिल न हो, तो कम-से-कम यह नामुराद मोहरा तो हाथ में बना ही रहे।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ग) यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना ही खोना है।
अंधों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन
भय का अंधापन ममता का अंधापन
अधिकारों का अंधापन जीत गया
जो कुछ सुंदर था, शुभ था, कोमलतम था
वह हार गया ..... द्वापर युग बीत गया।

(घ) हिंदी, बंगला, मराठी, पंजाबी, काश्मीरी आदि भाषाओं में भक्ति-आंदोलन मनुष्य-मात्र की समानता घोषित करने वाला एक व्यापक और शक्तिशाली आंदोलन था। यह आंदोलन वर्णों और मतमतांतरों में बंटे हुए सामंती समाज की व्यवस्था के विरुद्ध था, और इस व्यवस्था के कमजोर होने से वह उत्पन्न हुआ था। गरीब किसानों, कारीगरों, सौदागरों आदि की सक्रिय सहानुभूति से उसका प्रसार हुआ था। प्राचीन रूढ़िवाद जहाँ धार्मिक कर्मकांड को महत्त्व देता था, वहाँ यह आंदोलन प्रेम को भक्ति और मुक्ति का आधार मानता था।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) श्यामा चाहती कि मैं सदैव कविता में डूबा रहूँ। कविता में मेरा भविष्य शायद ही उसने देखा होगा, पर इतना तो उसने अनुभव ही किया होगा कि काव्य सृजन में ही मेरा मन कुछ शांति, कुछ मुक्ति पाता है, जो अन्यथा उद्विग्न, उद्भ्रांत अथवा अशांत रहता है। शायद अब भी मन: शक्तियों का पूर्ण केंद्रीकरण, तन्मयता, तल्लीनता, परिपूर्ण आत्म-विस्मरण में काव्य-सृजन के ही क्षणों में जानता हूँ-जिसे अब मैं 'समाधि' कहने लगा हूँ।

2. '''अंधेर नगरी' एक राजनीतिक व्यंग्य नाटक का सफल उदाहरण है।'' इस कथन की समीक्षा कीजिए। **16**

3. 'स्कन्दगुप्त' नाटक में व्यक्त राष्ट्रवादी विचारों का आलोचनात्मक मूल्यांकन कीजिए। **16**

www.ignouassignmentguru.com

4. '''आधे-अधूरे' नाटक रंगमंचीय दृष्टि से सफल है।'' इस कथन की विवेचना कीजिए। **16**

5. 'अंधायुग' नाटक की नाट्यगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। **16**

6. 'कुटज' निबंध के आधार पर द्विवेदी जी के ललित निबंधों की विशेषताएँ बताइए। **16**

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

7. '''तीसरे दर्जे का श्रद्धेय' व्यंग्य निबंध का उत्कृष्ट उदाहरण है।'' इस कथन की समीक्षा करते हुए अपना मत प्रस्तुत कीजिए। **16**

8. 'कलन का सिपाही' के आधार पर जीवनी विधा के महत्त्व पर प्रकाश डालिए। **16**

9. 'नुक्कड़ नाटक' की विशेषताओं के आधार पर 'औरत' का मूल्यांकन कीजिए। **16**

10. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणी लिखिए : **8x2=16**

(क) 'किन्नर देश की ओर' का प्रतिपाद्य

(ख) 'धोखा' निबंध की भाषा शैली

(ग) 'अदम्य जीवन' और रिपोर्ताज

(घ) संस्मरण विधा

IGNOU ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-4

00837

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2013

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न* ***अनिवार्य*** *है। शेष में से* ***किन्हीं चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. ***किन्हीं तीन*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 3x12=36

(क) कविता करना अनंत पुण्य का फल है। इस दुराशा और अनंत उत्कंठा से कवि-जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई। संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा। परंतु कैसी विडंबना! लक्ष्मी के लालों का भ्रू-भंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या! ..एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन जो दूसरों की दया में अपना अस्तित्व रखता है!

(ख) बादलों ने सूरज की हत्या कर दी, सूरज मर गया। मैं दूसरों का बोझ ढोता हूँ। मेरे रिक्शे में आईने लगे हैं। आईने में मैं अपना मुँह देखता हूँ। सूरज नहीं रहा। अब धरती पर आईनों का शासन होगा। आईने अब उगने और न उगने वाले बीज अलग-अलग कर देंगे।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ग) सच है, भ्रमोत्पादक भ्रमस्वरूप भगवान के बनाए हुए भव में जो कुछ है, भ्रम ही है। जब तक भ्रम है तभी संसार है बरंच संसार का स्वामी भी तभी तक है, फिर कुछ भी नहीं! और कौन जाने हो तो हमें उससे कोई काम नहीं! परमेश्वर सबका भ्रम बनाए रखे इसी में सब कुछ है। जहाँ भरम खुल गया वहीं लाख की भलमंसी खाक में मिल जाती है।

(घ) इस देश में अनेक भाषाएँ हैं, अनेक जातियाँ हैं, इन जातियों की अपनी-अपनी संस्कृति हैं। इन सभी जातियों की संस्कृति के सामान्य तत्वों का, उनके समुच्चय का नाम भारतीय संस्कृति हैं। भारत की जातियों से भिन्न भारतीय संस्कृति की सत्ता कहीं नहीं है। वर्गों की, जनसाधारण की संस्कृति की कुछ जातीय विशेषताएँ होती हैं।

(ङ) अब भी 'राम की शक्तिपूजा' अथवा निराला के अनेक गीत बार-बार पढ़ता हूँ, लेकिन 'तुलसीदास' जब-जब पढ़ने बैठता हूँ तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मेरे सामने खुलता है, उस से भी विलक्षण बात यह है कि वह संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में घटित होता हुआ दिखता है। मैं मानो संसार का एक स्थिर चित्र नहीं बल्कि एक जीवंत चलचित्र देख रहा होता हूँ। ऐसी रचनाएँ तो कई होती हैं जिनमें एक रसिक हृदय बोलता है। बिरली ही रचना ऐसी होती है जिसमें एक सांस्कृतिक चेतना सर्जनात्मक रूप में अवतरित हुई हो।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

2. 'अंधेर नगरी' नाटक में निहित व्यंग्य के आधार पर नाटक की प्रासंगिकता बताइए। 16

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक के आधार पर प्रसाद की इतिहास दृष्टि पर प्रकाश डालिए। 16

4. मध्यवर्गीय जीवन के परिप्रेक्ष्य में 'आधे-अधूरे' का मूल्यांकन कीजिए। 16

5. 'अंधायुग' के किन्हीं दो प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताओं का विश्लेषण कीजिए। 16

6. 'धोखा' निबंध की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिए। 16

7. ललित निबंध के रूप में 'कुटज' की समीक्षा कीजिए। 16

8. जीवनी साहित्य की श्रेष्ठ उपलब्धि के रूप में 'कलम का सिपाही' का मूल्यांकन कीजिए। 16

www.ignouassignmentguru.com

9. 'बसंत का अग्रदूत' संस्मरण के आधार पर निराला के व्यक्तित्व एवं उनके भावबोध के मुख्य आयामों पर प्रकाश डालिए। 16

10. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणी लिखिए : 8x2=16

(क) 'लोभ और प्रीति' निबंध का वैचारिक पक्ष

(ख) 'स्कंदगुप्त' नाटक की भाषा

(ग) असंगत नाटक (ऐब्सर्ड)

(घ) 'किन्नर देश की ओर' शीर्षक यात्रा वृत्तांत

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2014

एम.एच.डी.–4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *पहला प्रश्न अनिवार्य है। शेष में से* ***किन्हीं चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

1. ***किन्हीं तीन*** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए: 3x12=36

(क) ऐसा जीवन तो विडंबना है, जिसके लिए रात–दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद–राशि का विलास हो, तब भी दाँत–पर–दाँत रखे मुट्ठियों को बाँधे–लाल आँखों से एक दूसरे को घूरा करें! बसंत के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहाकर लाल कर दिया जाय! नहीं–नहीं, चक्र! मेरी समझ में मानव जीवन का यही उद्देश्य नहीं है। और भी कोई निगूढ़ रहस्य है चाहे मैं स्वयं उसे न जान सका हूँ।

(ख) कहीं–कहीं अज्ञात–नाम–गोत्र झाड़–झंखाड़ और बेहया–से पेड़ खड़े अवश्य दिख जाते हैं, पर और कोई हरियाली नहीं। दूब तक सूख गई है। काली–काली चट्टानें और बीच–बीच में शुष्कता की अंतर्निरूद्ध सत्ता का इज़हार करने वाली

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

रक्ताभ रेती। रस कहाँ है? ये जो ठिगने–से लेकिन शानदार दरख्त गर्मी की भयंकर मार खा–खाकर और भूख–प्यास की निरंतर चोट सह–सहकर भी जी रहे हैं, इन्हें क्या कहूँ? सिर्फ जी ही नहीं रहे हैं, हंस भी रहे हैं।

(ग) मेरी वैयक्तिक सीमाओं के बाहर भी सत्य हुआ करता है आज मुझे मान हुआ। सहसा यह उगा कोई बाँध टूट गया है कोटि–कोटि योजन तक दहाड़ता हुआ समुंद्र मेरे वैयक्तिक अनुमानित सीमित जग को लहरों की विषय–जिदवाओं से निगलता हुआ मेरे अंतर्मन में बैठ गया सब कुछ बह गया मेरे अपने वैयक्तिक मूल्य मेरी निश्चिंत किंतु ज्ञानहीन आस्थाएँ।

(घ) हमारे सभ्यता–दर्पित शिष्ट समाज का काव्यानन्द छिछला और उसका लक्ष्य मनोरंजन मात्र रहता है, इसी से उसमें सम्मिलित होने वालों की भेदबुद्धि एक दूसरे को नीचा दिखलाने के प्रयत्न और वैयक्तिक विषमताएँ और अधिक विस्तार पा लेती हैं। एक वही हिंडोला है, जिसमें ऊँचाई–नीचाई का स्पर्श भी एक आत्मविस्मृति में विश्राम देता है। दूसरा वह दंगल का मैदान है जिसका सम धरातल भी हार–जीत के दाँव–पेंचों के कारण सतर्कता की श्रांति उत्पन्न करता है।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) सम्पत्ति ने मनुष्य को क्रीतदास बना लिया है। उसकी सारी मानसिक, आत्मिक और दैहिक शक्ति केवल संपत्ति के संचय में बीत जाती हैं। मरते-दम भी हमें यही हसरत रहती है की हाय इस सम्पत्ति का क्या हाल होगा। हम सम्पत्ति के लिए जीते है, उसी के लिए मरते है। हम विद्वान बनते है, सम्पत्ति के लिए, गेरूए वस्त्र धारण करते हैं सम्पत्ति के लिएं घी में आलू मिलाकर हम क्यों बेचते हैं? दूध में पानी क्यों मिलाते है? भाँति–भाँति के वेज्ञानिक हिंसा–यंत्र क्यों बनाते है? वेश्याएँ क्यों बनती है और डाके क्यों पड़ते हैं? इसका एकमात्र कारण सम्पत्ति है। जब तक सम्पत्तिहीन समाज का संगठन न होगा तब तक सम्पत्ति–व्यक्तिवाद का अंत न होगा, संसार को शांति न मिलेगी।

2. एक प्रहसन के रूप में 'अंधेर नगरी' की समीक्षा कीजिए। 16

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक के आधार पर स्कंदगुप्त की चारित्रिक विशेषताओं को विश्लेषण कीजिए। 16

4. 'आधे अधूरे' की भाषा एवं संवाद की विशिष्टताओं का विवेचन कीजिए। 16

5. 'अंधायुग' में व्यक्त पौराणिक आख्यान के आधुनिक संदर्भों की व्याख्या कीजिए। 16

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

6. 'ताँबे के कीड़े' एकांकी की प्रतीक योजना पर प्रकाश डालिए। 16

7. 'संस्कृति और जातीयता' निबंध में व्यक्त' डॉ. राम विलास शर्मा की धारणाओं की समीक्षा कीजिए। 16

8. आत्मकथा की विशेषताओं के संदर्भ में 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ– का मूल्यांकन कीजिए। 16

9. संस्मरणात्मक रेखचित्र 'ठकुरी बाबा' की भाषा और शिल्प की विशिष्टताओं का विवेचन कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से ***किन्हीं दो*** पर टिप्पणी लिखिए : 8x2=16

(क) 'अंधेर नगरी' नाटक में भाषिक प्रयोग

(ख) ललित निबंध के रूप में 'कुटज'

(ग) 'अंधायुग' का राजनीतिक संदर्भ

(घ) 'बसंत का अग्रदूत' की अंतर्वस्तु

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

——— *** ———

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

07205

दिसम्बर, 2014

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष किन्हीं **चार** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) कौन कहता है कि तुम अकेले हो ? समग्र संसार तुम्हारे साथ है । स्वानुभूति को जागृत करो । यदि भविष्यत् से डरते हो कि तुम्हारा पतन समीप है, तो तुम उस अनिवार्य स्रोत से जुड़ जाओ । तुम्हारे प्रचंड और विश्वासपूर्ण पदाघात से विंध्य के समान कोई शैल उठ खड़ा होगा, जो उस विघ्न-स्रोत को लौटा देगा !

(ख) मैंने कहा था, यह नाटक भी मेरी ही तरह अनिश्चित है । उसका कारण भी यही है कि मैं इसमें हूँ और मेरे होने से ही सब कुछ इसमें निर्धारित या अनिर्धारित है । एक विशेष परिवार, उसकी विशेष परिस्थितियाँ ! परिवार दूसरा होने से परिस्थितियाँ बदल जाती, मैं वही रहता । इसी तरह सब कुछ निर्धारित करता । इस परिवार की स्त्री के स्थान पर कोई दूसरी स्त्री किसी दूसरी तरह से मुझे झेलती या वह स्त्री मेरी भूमिका ले लेती और मैं उसकी भूमिका ले कर उसे झेलता ।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ग) पृथ्वी पर रसमय वनस्पति नहीं होगी
शिशु होंगे पैदा विकलांग और कुष्ठग्रस्त
सारी मनुष्य जाति बौनी हो जाएगी
जो कुछ भी ज्ञान संचित किया है मनुष्य ने
सतयुग में, त्रेता में, द्वापर में
सदा-सदा के लिए होगा विलीन वह
गेहूँ की बालों में सर्प फुफकारेंगे
नदियों में बह-बह कर आयेगी पिघली आग ।

(घ) याज्ञवल्क्य ने जो बात धक्कामार ढंग से कह दी थी वह अंतिम नहीं थी । वे 'आत्मन:' का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे । व्यक्ति की 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है । अपने में सब और सब में आप – इस प्रकार की एक समष्टि-बुद्धि जब तक नहीं आती तब तक पूर्ण सुख का आनन्द भी नहीं मिलता ।

(ङ) अब भी उस अनुभव को याद करता हूँ तो मानो एक गहराई में खो जाता हूँ । अब भी 'राम की शक्तिपूजा' अथवा निराला के अनेक गीत बार-बार पढ़ता हूँ, लेकिन तुलसीदास जब-जब पढ़ने बैठता हूँ तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मेरे सामने खुलता है, उससे भी विलक्षण बात यह है कि वह संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में घटित होता हुआ दिखता है । मैं मानो संसार का एक स्थिर चित्र नहीं बल्कि एक जीवंत चलचित्र देख रहा होता हूँ ।

2. हिन्दी नाट्य-परम्परा को "अंधेर नगरी" नाटक ने किस तरह से प्रभावित किया है ? अपना मत प्रस्तुत कीजिए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक के माध्यम से जयशंकर प्रसाद ने इतिहास का वर्तमान सन्दर्भों में किस प्रकार उपयोग किया है ? सोदाहरण उत्तर दीजिए । *16*

4. मोहन राकेश की नाट्य दृष्टि पर प्रकाश डालिए । *16*

5. 'अंधायुग में मिथकीय आख्यान को आधुनिक संदर्भों में प्रस्तुत किया गया है ।' इस कथन का तर्कसंगत विवेचन कीजिए । *16*

6. "लोभ और प्रीति" निबन्ध के आधार पर आचार्य शुक्ल की निबन्ध शैली की विशेषताएँ बताइए । *16*

7. "तीसरे दर्जे का श्रद्धेय" में बुद्धिजीवियों पर किए गए व्यंग्य का विश्लेषण कीजिए । *16*

8. आत्मकथा की विशेषताओं के सन्दर्भ में "क्या भूलूँ क्या याद करूँ" का मूल्यांकन कीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

   (क) नुक्कड़ नाटक

   (ख) ठकुरी बाबा

   (ग) आत्मकथा और जीवनी

   (घ) हिन्दी जातीयता

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 3

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

09050

जून, 2015

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है । शेष किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) पहेली ! यह भी रहस्य ही है । पुरुष है कुतूहल और प्रश्न; और स्त्री है विश्लेषण, उत्तर और सब बातों का समाधान । पुरुष के सब प्रश्नों का उत्तर देने के लिए वह प्रस्तुत है । उसके कुतूहल – उसके अभावों को परिपूर्ण करने का उष्ण प्रयत्न और शीतल उपचार !

(ख) मैं यहाँ थी, तो मुझे कई बार लगता था कि मैं एक घर में नहीं, चिड़ियाघर के एक पिंजरे में रहती हूँ जहाँ.... आप शायद सोच भी नहीं सकते कि क्या-क्या होता रहा है यहाँ । डैडी का चीखते हुए ममा के कपड़े तार-तार कर देना.... उनके मुँह पर पट्टी बाँध कर उन्हें बंद कमरे में पीटना.... खींचते हुए गुसलखाने में कमोड पर ले जा कर.... (सिहरकर) मैं तो बयान भी नहीं कर सकती कि कितने-कितने भयानक दृश्य देखे हैं इस घर में मैंने ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ग) लेकिन शेष मेरा दायित्व लेंगे
बाक़ी सभी....
मेरा दायित्व वह स्थित रहेगा
हर मानव के उस वृत्त में
जिसके सहारे वह
सभी परिस्थितियों का अतिक्रमण करते हुए
नूतन निर्माण करेगा पिछले ध्वंसों पर !

(घ) जो सर्वथा निराकार होने पर भी मत्स्य, कच्छपादि रूपों में प्रकट होता है, और शुद्ध निर्विकार कहलाने पर भी नाना प्रकार की लीला किया करता है, वह धोखे का पुतला नहीं है तो क्या है ? हम आदर के मारे उसे भ्रम से रहित करते हैं, पर जिसके विषय में कोई निश्चयपूर्वक 'इदमित्थं' (बिल्कुल सही) कह नहीं सकता, जिसका सारा भेद स्पष्ट रूप से कोई जान ही नहीं सकता, वह निर्भ्रम या भ्रमरहित क्यों कर कहा जा सकता है ।

(ङ) तब तो बंगाल अभी जीवित है ! आज भी वह अपना रास्ता खोज निकालना जानता और चाहता है । भूख से व्याकुल होकर भी यह भारत का संस्कृति-जनक सिर झुकाने को तैयार नहीं है । आज भी वह इन सब आँधी तूफ़ानों को झेलकर फिर से विराट रूप में फूट निकलना चाहता है । सचमुच कोई इनका कुछ नहीं कर सकता । यदि जनता में चेतना है, तो इन्हें भूखों मारने वाले नर-पिशाच नाज-चोरों का अंत दूर नहीं ।

2. भारतेन्दु की नाट्य-दृष्टि पर प्रकाश डालिए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

3. रंगमंचीयता की दृष्टि से "स्कंदगुप्त" नाटक का मूल्यांकन कीजिए । *16*

4. हिन्दी नाट्य-परंपरा में "आधे-अधूरे" का स्थान निर्धारित कीजिए । *16*

5. काव्य नाटक के रूप में "अंधा युग" की समीक्षा कीजिए । *16*

6. ललित निबंध की दृष्टि से "कुटज" की विशेषताओं का विवेचन कीजिए । *16*

7. 'रेखाचित्र' विधा को ध्यान में रखते हुए "ठकुरी बाबा" का मूल्यांकन कीजिए । *16*

8. हिन्दी यात्रा-वृत्तांत की परंपरा में राहुल सांकृत्यायन का क्या योगदान है ? "किन्नर देश की ओर" को केन्द्र में रखते हुए उत्तर दीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

   (क) ताँबे के कीड़े

   (ख) हिन्दी व्यंग्य निबंध

   (ग) वसंत का अग्रदूत

   (घ) साहित्यिक विधा के रूप में साक्षात्कार

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

11501

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2015

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है । शेष किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) सरल युवक ! इस गतिशील जगत् में परिवर्तन पर आश्चर्य ! परिवर्तन रुका कि महापरिवर्तन – प्रलय – हुआ ! परिवर्तन ही सृष्टि है, जीवन है, स्थिर होना मृत्यु है, निश्चेष्ट शांति मरण है । प्रकृति क्रियाशील है । समय पुरुष और स्त्री की गेंद लेकर दोनों हाथ से खेलता है । पुंल्लिंग और स्त्रीलिंग की समष्टि अभिव्यक्ति की कुंजी है । पुरुष उछाल दिया जाता है, उत्क्षेपण होता है । स्त्री आकर्षण करती है । यही जड़ प्रकृति का चेतन रहस्य है ।

(ख) मैंने कहा था यह नाटक भी मेरी ही तरह अनिश्चित है । उसका कारण भी यही है कि मैं इसमें हूँ और मेरे होने से ही सब कुछ इसमें निर्धारित या अनिर्धारित है । एक विशेष परिवार, उसकी विशेष परिस्थितियाँ ! परिवार दूसरा होने से परिस्थितियाँ बदल जातीं, मैं वही रहता । इसी तरह सब कुछ निर्धारित करता । इस

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

परिवार की स्त्री के स्थान पर कोई दूसरी स्त्री किसी दूसरी तरह से मुझे झेलती या वह स्त्री मेरी भूमिका ले लेती और मैं उसकी भूमिका ले कर उसे झेलता । नाटक अंत तक फिर भी इतना ही कठिन होता कि इसमें मुख्य भूमिका किसकी थी – मेरी, उस स्त्री की, परिस्थितियों की, या तीनों के बीच से उठते कुछ सवालों की ।

(ग) संस्कृति थी यह एक बूढ़े और अंधे की
जिसकी संतानों ने
महायुद्ध घोषित किए,
जिसके अंधेपन में मर्यादा
गलित अंग वेश्या-स्त्री
प्रजाजनों को भी रोगी बनाती फिरी
उस अंधी संस्कृति,
उस रोगी मर्यादा की
रक्षा हम करते रहे
सत्रह दिन ।

(घ) यों ही किसी को धोखा देना हो तो इस रीति से दो कि तुम्हारी चालबाजी कोई भाँप न सके, और तुम्हारा बलि पशु यदि किसी कारण से तुम्हारे हथकंडे ताड़-भी जाय तो किसी से प्रकाशित करने के काम का न रहे । फिर बस अपनी चतुरता के मधुर फल को मूर्खों के आँसू तथा गुरुघंटालों के धन्यवाद की वर्षा के जल से धो और स्वादपूर्वक खा ! इन दो रीतियों से धोखा बुरा नहीं है । अगले लोग कह गए हैं कि आदमी कुछ खो के सीखता है, अर्थात् धोखा खाए बिना अक्किल नहीं आती, और बेईमानी तथा नीति कुशलता में इतना ही भेद है कि जाहिर हो जाय तो बेईमानी कहलाती है और छिपी रहे तो बुद्धिमानी है ।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) इसके बाद की जिस भेंट का उल्लेख करना चाहता हूँ उससे पहले निराला जी के काव्य के विषय में मेरा मन पूरी तरह बदल चुका था । वह परिवर्तन कुछ नाटकीय ढंग से ही हुआ । शायद कुछ पाठकों के लिए यह भी आश्चर्य की बात होगी कि वह उनकी 'जुही की कली' अथवा 'राम की शक्ति पूजा' पढ़ कर नहीं हुआ, उनका 'तुलसीदास' पढ़ कर हुआ । अब भी उस अनुभव को याद करता हूँ तो मानो एक गहराई में खो जाता हूँ । अब भी 'राम की शक्ति पूजा' अथवा निराला के अनेक गीत बार-बार पढ़ता हूँ, लेकिन 'तुलसीदास' जब-जब पढ़ने बैठता हूँ तो इतना ही नहीं कि एक नया संसार मेरे सामने खुलता है, उससे भी विलक्षण बात यह कि वह संसार मानो एक ऐतिहासिक अनुक्रम में घटित होता हुआ दीखता है ।

2. भारतेन्दु के नाटक 'अंधेर नगरी' ने परवर्ती हिन्दी नाट्य परम्परा को किस प्रकार प्रभावित किया है ? *16*

3. " 'स्कंदगुप्त' नाटक में जयशंकर प्रसाद ने भारतीय इतिहास के माध्यम से वर्तमान के प्रश्नों को उभारने का प्रयास किया है ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए । *16*

4. " 'अंधा युग' में पौराणिक आख्यान के माध्यम से मौजूदा समय के राजनीतिक-सामाजिक मूल्यों के विघटन को उजागर किया गया है ।" अपना मत प्रकट करते हुए तार्किक विवेचन कीजिए । *16*

5. 'आधे अधूरे' के नाट्य शिल्प की विशेषताएँ बताइए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

6. रामचंद्र शुक्ल के भाव और मनोविकार संबंधी निबंधों के संदर्भ में 'लोभ और प्रीति' की विशेषताएँ बताइए । *16*

7. 'कुरज' के माध्यम से लेखक क्या कहना चाहता है ? सोदाहरण उल्लेख कीजिए । *16*

8. रेखाचित्र की विशेषताओं के संदर्भ में 'ठकुरी बाबा' का विश्लेषण और मूल्यांकन कीजिए । *16*

9. 'ऑक्टोवियो पॉज' को दृष्टि में रखते हुए एक साहित्यिक विधा के रूप में साक्षात्कार के महत्त्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) असंगत (एब्सर्ड) नाटक

(ख) 'कलम का सिपाही'

(ग) हरिशंकर परसाई का व्यंग्य

(घ) रिपोर्ताज

ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

10816

जून, 2016

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष किन्हीं* ***चार*** *प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) कविता करना अनंत पुण्य का फल है । इस दुराशा और अनंत उत्कंठा से कवि-जीवन व्यतीत करने की इच्छा हुई । संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा । परंतु कैसी विडंबना ! लक्ष्मी के लालों का भ्रू-भंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या ! — एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन, जो दूसरों की दया में अपना अस्तित्व रखता है ! संचित हृदय-कोश के अमूल्य रत्नों की उदारता और दारिद्र्य का व्यंग्यात्मक कठोर अट्टहास, दोनों की विषमता की कौन-सी व्यवस्था होगी ?

(ख) मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ । ... एक आदमी है । घर बसाता है । क्यों बसाता है ? एक ज़रूरत पूरी करने के लिए । कौन-सी ज़रूरत ? अपने अंदर के किसी उसको ... एक अधूरापन कह लीजिए उसे ... उसको भर सकने की । इस तरह उसे अपने लिए ... अपने में ... पूरा होना

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

होता है । किन्हीं दूसरों को पूरा करते रहने में ही ज़िंदगी नहीं काटनी होती । पर आपके महेन्द्र के लिए ज़िंदगी का मतलब रहा है ... जैसे सिर्फ़ दूसरों के ख़ाली खाने भरने की ही एक चीज़ है वह । जो कुछ वे दूसरे उससे चाहते हैं, उम्मीद करते हैं ... या जिस तरह वे सोचते हैं उनकी ज़िंदगी में उसका इस्तेमाल हो सकता है ।

(ग) धर्म, नीति, मर्यादा, यह सब हैं केवल आडम्बर-मात्र,
मैंने यह बार-बार देखा था ।
निर्णय के क्षण में विवेक और मर्यादा
व्यर्थ सिद्ध होते आए हैं सदा
हम सबके मन में कहीं एक अंध गह्वर है ।
बर्बर पशु, अंधा पशु वास वहीं करता है,
स्वामी जो हमारे विवेक का,
नैतिकता, मर्यादा, अनासक्ति कृष्णार्पण
यह सब हैं अंधी प्रवृत्तियों की पोषाकें
जिनमें कटे कपड़ों की आँखें सिली रहती हैं
मुझको इस झूठे आडम्बर से नफ़रत थी
इसलिए स्वेच्छा से मैंने इन आँखों पर पट्टी चढ़ा रखी थी ।

(घ) धन का जो लोभ मानसिक व्याधि या व्यसन के रूप में होता है उसका प्रभाव अंतःकरण की शेष वृत्तियों पर यह होता है कि वे अनायास कुंठित हो जाती हैं । जो लोभ और मान-अपमान के भाव को, करुणा और दया के भाव को, न्याय और अन्याय के भाव को, यहाँ तक कि अपने कष्ट-निवारण या सुखभोग की इच्छा तक को दबा दे, वह मनुष्यता कहाँ तक रहने देगा ? जो अनाथ विधवा का सर्वस्वहरण करने के लिए कुर्क अमीन ले कर चढ़ाई करते हैं, जो अभिमानी धनिकों की दुत्कार सुनकर त्योरी पर बल नहीं आने देते, जो मिट्टी में रुपया गाड़ कर न आप खाते हैं न दूसरे को खाने देते हैं, जो अपने परिजनों का कष्ट-क्रन्दन सुन कर भी रुपए गिनने में लगे रहते हैं, वे अधमरे होकर जीते हैं ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) भारत में वर्ण-व्यवस्था का विरोध और उस व्यवस्था के टूटने पर आपत्ति – ये दोनों बातें बहुत पुरानी हैं । कबीर के समय से ही ये दोनों बातें साहित्य में ख़ूब उभर कर आई हैं । हिन्दी, बंगला, मराठी, पंजाबी, कश्मीरी आदि भाषाओं में भक्ति-आंदोलन मनुष्य-मात्र की समानता घोषित करने वाला एक व्यापक और शक्तिशाली आन्दोलन था । यह आन्दोलन वर्णों और मत-मतांतरों में बँटे हुए सामंती समाज की व्यवस्था के विरुद्ध था, और इस व्यवस्था के कमज़ोर होने से उत्पन्न हुआ था । ग़रीब किसानों, कारीगरों, सौदागरों आदि की सक्रिय सहानुभूति से उसका प्रसार हुआ था । प्राचीन रूढ़िवाद जहाँ धार्मिक कर्मकांड को महत्त्व देता था, वहाँ यह आन्दोलन प्रेम को भक्ति और मुक्ति का आधार मानता था ।

2. नाट्य-रचना को प्रोत्साहित करने के पीछे भारतेन्दु का क्या उद्देश्य था ? 'अँधेर नगरी' का इस संदर्भ में मूल्यांकन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' नाटक को केन्द्र में रखते हुए जयशंकर प्रसाद की रंग-दृष्टि पर प्रकाश डालिए । *16*

4. स्त्री-पुरुष सम्बन्धों के संदर्भ में 'आधे-अधूरे' की विवेचना कीजिए । *16*

5. 'अंधा युग' नाटक के चरित्रों की प्रतीकात्मकता पर विचार करते हुए नाटक में प्रस्तुत मूल्य संघर्ष का विवेचन कीजिए । *16*

6. प्रताप नारायण मिश्र की निबंध-शैली की विशेषताएँ बताइए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

7. " 'वसंत का अग्रदूत' एक हिन्दी लेखक द्वारा दूसरे हिन्दी लेखक पर लिखा गया संस्मरण है अतः इसमें संस्मरण और समीक्षा दोनों का वैशिष्ट्य दिखाई देता है ।" इस कथन से आप कहाँ तक सहमत हैं ? *16*

8. "हिन्दी जीवनी-साहित्य में 'कलम का सिपाही' एक महत्त्वपूर्ण उपलब्धि है ।" इस कथन की समीक्षा कीजिए । *16*

9. रिपोर्ताज की विशेषताओं को दृष्टि में रखते हुए अदम्य जीवन की समीक्षा कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) नुक्कड़ नाटक

(ख) 'कुटज' निबंध

(ग) रेखाचित्रकार महादेवी वर्मा

(घ) ऑक्टॉवियो पॉज

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

03144

दिसम्बर, 2016

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) जात ले जात, टके सेर जात । एक टका दो, हम अभी अपनी जात बेचते हैं । टके के वास्ते ब्राह्मण से धोबी हो जाएँ और धोबी को ब्राह्मण कर दें, टके के वास्ते जैसी कहो वैसी व्यवस्था दें । टके के वास्ते झूठ को सच करें । टके के वास्ते ब्राह्मण से मुसलमान, टके के वास्ते हिंदू से क्रिस्तान । टके के वास्ते धर्म और प्रतिष्ठा दोनों बेचें, टके के वास्ते झूठी गवाही दें । टके के वास्ते पाप को पुण्य मानें, टके के वास्ते नीचे को भी पितामह बनावें । वेद धर्म कुल-मरजादा सचाई-बड़ाई सब टके सेर ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) किसलिए ? त्रस्त प्रजा की रक्षा के लिए, सतीत्व के सम्मान के लिए, देवता-ब्राह्मण और गौ की मर्यादा में विश्वास के लिए, आतंक से प्रकृति को आश्वासन देने के लिए — आपको अपने अधिकार का उपयोग करना होगा । युवराज ! इसीलिए मैंने कहा था कि आप अपने अधिकारों के प्रति उदासीन हैं, जिसकी मुझे बड़ी चिंता है । गुप्त-साम्राज्य के भावी शासक को अपने उत्तरदायित्व का ध्यान नहीं ।

(ग) मुझे उस असलियत की बात करने दीजिए जिसे मैं जानती हूँ ।... एक आदमी है । घर बसाता है । क्यों बसाता है ? एक ज़रूरत पूरी करने के लिए । कौन-सी ज़रूरत ? अपने अंदर के किसी उसको... एक अधूरापन कह लीजिए उसे... उसको भर सकने की । इस तरह उसे अपने लिए... अपने में... पूरा होना होता है । किन्हीं दूसरों को पूरा करते रहने में ही ज़िंदगी नहीं काटनी होती । पर आपके महेंद्र के लिए ज़िंदगी का मतलब रहा है... जैसे सिर्फ़ दूसरों के ख़ाली खाने भरने की ही एक चीज़ है वह । जो कुछ वे दूसरे उससे चाहते हैं, उम्मीद करते हैं... या जिस तरह वे सोचते हैं उनकी ज़िंदगी में उसका इस्तेमाल हो सकता है ।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(घ) संस्कृति थी यह एक बूढ़े और अंधे की
जिसकी संतानों ने
महायुद्ध घोषित किए,
जिसके अंधेपन में मर्यादा
गलित-अंग वेश्या-सी
प्रजाजनों को भी रोगी बनाती फिरी
उस अंधी संस्कृति,
उस रोगी मर्यादा की
रक्षा हम करते रहे
सत्रह दिन ।

(ङ) धोखा खाने वाला मूर्ख और धोखा देने वाला ठग क्यों कहलाता है ? जब सब कुछ धोखा ही धोखा है, और धोखे से अलग रहना ईश्वर की भी सामर्थ्य से दूर है, तथा धोखे ही के कारण संसार का चर्खा पिन्न-पिन्न चला जाता है, नहीं तो ढिच्चर-ढिच्चर होने लगे, बरंच रही न जाय तो फिर इस शब्द का स्मरण वा श्रवण करते ही आप की नाक-भौंह क्यों सुकुड़ जाती है ?

www.ignouassignmentguru.com

2. प्रहसन के रूप में 'अंधेर नगरी' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' के आधार पर जयशंकर प्रसाद की नाट्य-दृष्टि का विवेचन कीजिए । *16*

4. 'आधे अधूरे' के नाट्य-शिल्प पर विचार कीजिए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

5. 'अंधा युग' के कथ्य का विश्लेषण कीजिए । *16*

6. एकांकी के तत्त्वों के आधार पर 'ताँबे के कीड़े' एकांकी का विवेचन कीजिए । *16*

7. 'धोखा' निबंध की भाषा और शिल्प पर प्रकाश डालिए । *16*

8. 'किन्नर देश की ओर' की विशेषताएँ बताइए । *16*

9. रेखाचित्र के रूप में 'ठकुरी बाबा' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

10. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

    (क) 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' का महत्त्व

    (ख) 'वसंत का अग्रदूत' का संरचनात्मक वैशिष्ट्य

    (ग) कलम का सिपाही

    (घ) हरिशंकर परसाई के लेखन में व्यंग्य

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

11966

जून, 2017

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) युद्ध क्या गान नहीं है ? रुद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव नृत्य, और शस्त्रों का वाद्य मिलकर एक भैरव-संगीत की सृष्टि होती है । जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना, जीवन-रहस्य के चरम सौंदर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव — केवल सच्चे वीर-हृदय को होता है, ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरंतर संगीत है । उसे सुनने के लिए हृदय में साहस और बल एकत्र करो । अत्याचार के श्मशान में ही मंगल का — शिव का, सत्य-सुंदर संगीत का समारंभ होता है ।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) वह नफ़रत करती है इस सबसे – इस आदमी के ऐसा होने से । वह एक पूरा आदमी चाहती है अपने लिए एक... पूरा... आदमी । गला फाड़कर वह यह बात कहती है । कभी इस आदमी को ही वह आदमी बना सकने की कोशिश करती है । कभी तड़पकर अपने को इससे अलग कर लेना चाहती है । पर अगर उसकी कोशिशों से थोड़ा भी फ़र्क़ पड़ने लगता है इस आदमी में, तो दोस्तों में इनका ग़म मनाया जाने लगता है ।

(ग) पर वह संसार
स्वत: अपने अंधेपन से उपजा था ।
मैंने अपने ही वैयक्तिक संवेदन से जो जाना था
केवल उतना ही था मेरे लिए वस्तु-जगत्
इन्द्रजाल की माया-सृष्टि के समान
घने गहरे अँधियारे में
एक काले बिंदु से
मेरे मन ने सारे भाव किये थे विकसित
मेरी सब वृत्तियाँ उसी से परिचालित थीं !
मेरा स्नेह, मेरी घृणा, मेरी नीति, मेरा धर्म
बिल्कुल मेरा ही वैयक्तिक था ।

(घ) प्रेमी तो प्रेम कर चुका, उसका कोई प्रभाव प्रिय पर पड़े या न पड़े । उसके प्रेम में कोई कसर नहीं । प्रिय यदि उससे प्रेम करके उसकी आत्मा को तुष्ट नहीं करता तो उसमें उसका क्या दोष ? तुष्टि का विधान न होने से प्रेम के स्वरूप की पूर्णता में कोई त्रुटि नहीं आ सकती । जहाँ तक ऐसे प्रेम के साथ तुष्टि की कामना या अतृप्ति का क्षोभ लगा दिखाई पड़ता है वहाँ तक तो उसका उत्कर्ष प्रकट नहीं होता । पर जहाँ आत्मपुष्टि की वासना विरत हो जाती है या पहले ही से नहीं रहती, वहाँ प्रेम का अत्यंत निखरा हुआ निर्मल और विशुद्ध रूप दिखाई पड़ता है ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) सम्पत्ति ने मनुष्य को क्रीतदास बना लिया है । उसकी सारी मानसिक, आत्मिक और दैहिक शक्ति केवल सम्पत्ति के संचय में बीत जाती है । मरते-दम भी हमें यही हसरत रहती है कि हाय इस सम्पत्ति का क्या हाल होगा । हम सम्पत्ति के लिए जीते हैं, उसी के लिए मरते हैं । हम विद्वान् बनते हैं सम्पत्ति के लिए, गेरुए वस्त्र धारण करते हैं सम्पत्ति के लिए । घी में आलू मिलाकर हम क्यों बेचते हैं ? दूध में पानी क्यों मिलाते हैं ? भाँति-भाँति के वैज्ञानिक हिंसा-यंत्र क्यों बनाते हैं ? वेश्याएँ क्यों बनती हैं, और डाके क्यों पड़ते हैं ? इसका एकमात्र कारण सम्पत्ति है । जब तक सम्पत्तिहीन समाज का संगठन न होगा, जब तक सम्पत्ति-व्यक्तिवाद का अंत न होगा, संसार को शांति न मिलेगी ।

2. 'अंधेर नगरी' में राजनीतिक-सामाजिक यथार्थ का उद्घाटन किस रूप में हुआ है ? विवेचन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए । *16*

4. 'आधे-अधूरे' के कथ्य का विश्लेषण कीजिए । *16*

5. 'अंधा-युग' के प्रमुख पात्रों की चारित्रिक विशेषताएँ बताइए । *16*

6. 'औरत' के कथ्य और प्रतिपाद्य की चर्चा कीजिए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

7. ललित निबंध के रूप में 'कुटज' की विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 16

8. 'ठकुरी बाबा' में अभिव्यक्त सामाजिक चेतना की पड़ताल कीजिए। 16

9. 'आक्टेवियो पॉज' के विचारों को उद्‌घाटित कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2×8=16

(क) असंगत नाटक

(ख) हिन्दी जाति की अवधारणा

(ग) 'वसंत का अग्रदूत' में निराला

(घ) 'अदम्य जीवन' की मूल संवेदना

ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

13552

दिसम्बर, 2017

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) सभी धर्म, समय और देश की स्थिति के अनुसार विवृत होते रहे हैं और होंगे । हम लोगों को हठधर्मिता से उन आगंतुक क्रमिक पूर्णता प्राप्त करने वाले ज्ञानों से मुँह न फेरना चाहिए । हम लोग एक ही मूल धर्म की दो शाखाएँ हैं । आओ, हम दोनों विचार के फूलों से दुःख दग्ध मानवों का कठोर पथ कोमल करें ।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) मैंने कहा था, यह नाटक भी मेरी ही तरह अनिश्चित है । उसका कारण भी यही है कि मैं इसमें हूँ और मेरे होने से ही सब कुछ इसमें निर्धारित या अनिर्धारित है । एक विशेष परिवार, उसकी विशेष परिस्थितियाँ । परिवार दूसरा होने से परिस्थितियाँ बदल जातीं, मैं वही रहता । इसी तरह सब कुछ निर्धारित करता । इस परिवार की स्त्री के स्थान पर कोई दूसरी स्त्री किसी दूसरी तरह से मुझे झेलती या वह स्त्री मेरी भूमिका ले लेती और मैं उसकी भूमिका लेकर उसे झेलता ।

(ग) जो अपने हाथों से फ़ैक्ट्री में भीमकाय मशीनों के चक्के घुमाती है, वह मशीनें, जो उसकी ताक़त को ऐन उसकी आँखों के सामने हर दिन नोंचा करती है एक औरत, जिसके ख़ूने जिगर से ख़ूँख़ार कंकालों की प्यास बुझती है, एक औरत, जिसका ख़ून बहने से सरमायेदार का मुनाफ़ा बढ़ता है ।

(घ) जीवन की ऐसी आकस्मिक घटनाएँ ही वास्तव में जीवन को दिशा देती है, और जिसे हम 'नियति' का गंभीर-सा नाम देते हैं वह शायद बहुत नगण्य-सी लगने वाली घटनाओं से अपने बड़े-बड़े लक्ष्य प्राप्त करती है । क्या मेरे अंदर का कहानीकार मर गया ? मरता जीवन में कुछ भी नहीं है, केवल रूप बदलता है । कहानीकार मेरे कवि में आत्मसात् हो गया ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) मैं देख रहा था, जिनके शरीर में केवल हड्डियाँ ही शेष थीं आज भी उनमें जीवित रहने का साहस था । अकाल आया, बीमारी आई और फिर दूसरे अकाल की गहरी आँधी भी क्षितिज पर सिर उठाने लगी है, किन्तु अविचलित हैं यह ! किसलिए ? इसीलिए न कि वह जनता किसी से दब नहीं सकती । एक दिन विजेताओं ने इन्हें कुचला था, आज भी मनुष्य का स्वार्थ और भीषण व्यापार इन्हें निचोड़ रहा है, किंतु यह तो अभी तक अदम्य, अविजेय हैं !

2. 'अंधेर नगरी' के नाट्यशिल्प की विशेषताएँ बताइए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' के परिप्रेक्ष्य में प्रसाद की इतिहास दृष्टि की विवेचना कीजिए । *16*

4. 'आधे-अधूरे' में चित्रित मध्यवर्गीय जीवन पर प्रकाश डालिए । *16*

5. मिथकीय आख्यान के रूप में 'अंधायुग' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

6. 'धोखा' निबंध की अंतर्वस्तु पर विचार कीजिए । *16*

7. 'वसंत का अग्रदूत' की विशेषताएँ बताइए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

8. श्रीकांत वर्मा द्वारा आक्टेवियो पॉज के लिए गए साक्षात्कार में उठे प्रश्नों का विवेचन कीजिए । *16*

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) 'औरत' की कथावस्तु

(ख) 'लोभ और प्रीति' का प्रतिपाद्य

(ग) साहित्यिक विधा के रूप में 'जीवनी'

(घ) 'ठकुरी बाबा' का व्यक्तित्व

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

08185 **जून, 2018**

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

*नोट : **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं **चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) युद्ध क्या गान नहीं है ? रुद्र का शृंगीनाद, भैरवी का तांडव नृत्य, और शस्त्रों का वाद्य मिलकर एक भैरव-संगीत की सृष्टि होती है । जीवन के अंतिम दृश्य को जानते हुए, अपनी आँखों से देखना, जीवन-रहस्य के चरम सौंदर्य की नग्न और भयानक वास्तविकता का अनुभव — केवल सच्चे वीर हृदय को होता है, ध्वंसमयी महामाया प्रकृति का वह निरंतर संगीत है ।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) यह अजब युद्ध है नहीं किसी की भी जय
दोनों पक्षों को खोना-ही-खोना है
अंधों से शोभित था युग का सिंहासन
दोनों ही पक्षों में विवेक ही हारा
दोनों ही पक्षों में जीता अंधापन
भय का अंधापन, ममता का अंधापन
अधिकारों का अंधापन जीत गया
जो कुछ सुंदर था, शुभ था, कोमलतम था
वह हार गया ... द्वापर युग बीत गया ।

(ग) बादलों ने सूरज की हत्या कर दी, सूरज मर गया । मैं दूसरों का बोझ ढोता हूँ । मेरे रिक्शे में आईने लगे हैं । आईने में मैं अपना मुँह देखता हूँ । सूरज नहीं रहा । अब धरती पर आईनों का शासन होगा । आईने अब उगने और न उगने वाले बीज अलग-अलग कर देंगे ।

www.ignouassignmentguru.com

(घ) सच है, भ्रमोत्पादक भ्रमस्वरूप भगवान के बनाए हुए भव (संसार) में जो कुछ है भ्रम ही है । जब तक भ्रम है तभी संसार है बरंच संसार का स्वामी भी तभी तक है, फिर कुछ भी नहीं ! और कौन जाने हो तो हमें उससे कोई काम नहीं ! और कौन जाने हो तो हमें उससे कोई काम नहीं ! परमेश्वर सबका भ्रम बनाए रखे इसी में सब कुछ है । जहाँ भरम खुल गया वहीं लाख की भलमंसी ख़ाक में मिल जाती है ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) दम्पती सुखी नहीं हो सके, यह कहना व्यर्थ है । दासों का एक से दो होना प्रभुओं के लिए अच्छा हो सकता है, दासों के लिए नहीं । एक ओर उससे प्रभुता का विस्तार होता है और दूसरी ओर पराधीनता का प्रसार । स्वामी तो साम-दाम-भेद द्वारा उन्हें परस्पर लड़ाकर दासता को और दृढ़ करते हैं और दास अपनी विवश झुँझलाहट और हीन भावना के कारण एक-दूसरे के अभिशापों को विविध बनाकर उससे बाहर आने का मार्ग अवरुद्ध करते रहते हैं ।

2. 'अंधेर नगरी' में व्यक्त यथार्थ का विवेचन कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' की रंगमंचीय संभावनाओं पर विचार कीजिए । *16*

4. 'आधे-अधूरे' के नाट्य-शिल्प की विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । *16*

5. 'अंधा युग' के चरित्रों की प्रतीकात्मकता को स्पष्ट कीजिए । *16*

6. 'लोभ और प्रीति' के वैचारिक पक्ष की व्याख्या कीजिए । *16*

7. जीवनी की विशेषताओं का उल्लेख करते हुए 'कलम का सिपाही' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

8. रिपोर्ताज की विशेषताओं के संदर्भ में 'अदम्य जीवन' की समीक्षा कीजिए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

9. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) असंगत नाटक

(ख) निबंधकार प्रताप नारायण मिश्र

(ग) रेखाचित्र और संस्मरण

(घ) तीसरे दर्जे का श्रद्धेय का प्रतिपाद्य

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

07981

दिसम्बर, 2018

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) समष्टि में भी व्यष्टि रहती है । व्यक्तियों से ही जाति बनती है । विश्व-प्रेम, सर्वभूत-हित-कामना परम धर्म है, परंतु इसका अर्थ यह नहीं हो सकता कि अपने पर प्रेम न हो, इस अपने ने क्या अन्याय किया है जो इसका बहिष्कार हो ?

(ख) अपनी ज़िंदगी चौपट करने का ज़िम्मेदार मैं हूँ । तुम्हारी ज़िंदगी चौपट करने का ज़िम्मेदार मैं हूँ । इन सबकी ज़िंदगियाँ चौपट करने का ज़िम्मेदार मैं हूँ । फिर भी मैं इस घर से चिपका हूँ क्योंकि अंदर से मैं आराम-तलब हूँ, घर-घुसरा हूँ, मेरी हड्डियों में ज़ंग लगा है ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ग) मैं दो बड़े पहियों के बीच लगा हुआ
एक छोटा निरर्थक शोभा-चक्र हूँ
जो बड़े पहियों के साथ घूमता है
पर रथ को आगे नहीं बढ़ाता
और न धरती ही छू पाता है !
और जिसके जीवन का सबसे बड़ा दुर्भाग्य यह है
कि वह धुरी से उतर भी नहीं सकता !

(घ) याज्ञवल्क्य ने जो बात धक्कामार ढंग से कह दी थी वह अंतिम नहीं थी । वे 'आत्मनः' का अर्थ कुछ और बड़ा करना चाहते थे । व्यक्ति की 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है । अपने में सब और सबमें आप – इस प्रकार की एक समष्टि-बुद्धि जब तक नहीं आती तब तक पूर्ण सुख का आनंद भी नहीं मिलता ।

(ङ) ठकुरी बाबा को देने में एक विशेष प्रकार की आनंदानुभूति होती है, इसी से वे स्वयं पूछ-पूछकर इस विनिमय व्यापार को शिथिल होने नहीं देते । वे भावुक और विश्वासी जीव हैं । चिकारा हाथ में लेते ही उनके लिए संसार का अर्थ बदल जाता है । उनकी उदारता, सहज सौहार्द, सरल भावुकता आदि गुण ग्रामीण जीवन के लक्षण होने पर भी अब वहाँ सुलभ नहीं रहे । वास्तव में गाँव का जीवन इतना उत्पीड़ित और दुर्वह होता जा रहा है कि उसमें मनुष्यता को विकास के लिए अवकाश मिलना कठिन है ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

2. राजनीतिक प्रहसन के रूप में 'अंधेर नगरी' नाटक की विवेचना कीजिए । *16*

3. 'स्कंदगुप्त' की ऐतिहासिकता और वर्तमान प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए । *16*

4. 'आधे-अधूरे' नाटक की नायिका की चरित्रगत विशेषताओं का उल्लेख कीजिए । *16*

5. नाट्य-शिल्प की दृष्टि से 'अंधायुग' की विवेचना कीजिए । *16*

6. 'लोभ और प्रीति' निबंध की शैलीगत विशेषताओं का सोदाहरण उल्लेख कीजिए । *16*

7. व्यंग्य निबंध की दृष्टि से परसाई जी के निबंधों की समीक्षा कीजिए । *16*

8. नुक्कड़ नाटक-विधा की दृष्टि से 'औरत' का विवेचन कीजिए । *16*

9. 'संस्कृति और जातीयता' निबंध में व्यक्त विचारों का मूल्यांकन कीजिए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

10. निम्नलिखित में से किन्हीं *दो* पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) एब्सर्ड नाटक और 'ताँबे के कीड़े'

(ख) 'वसंत के अग्रदूत' का भाषिक सौंदर्य

(ग) राहुल जी का यात्रा-वृत्तांत

(घ) 'कलम का सिपाही' के प्रेमचंद

———

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 3 **एम.एच.डी.-004**

15295

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2019

एम.एच.डी.-004 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *(i)* ***प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है।*

*(ii) शेष में से **किन्हीं चार** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।*

---

1. निम्नलिखित में से **किन्हीं तीन** की संदर्भ सहित व्याख्या कीजिए : 3x12=36

(क) चूरन सभी महाजन खाते। जिससे जमा हजम कर जाते।।
चूरन खाते लाला लोग। जिसकी अकिल अजीरन रोग।।
चूरन खावैं एडिटर जात। जिनके पेट पचै नहीं बात।।
चूरन साहेब लोग जो खाता। सारा हिंद हजम कर जाता।।
चूरन पुलिस वाले खाते। सब कानून हजम कर जाते।।

(ख) ऐसा जीवन तो विडंबना है, जिसके लिए रात दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद-शशि का विलास हो, तब भी दांत-पर-दांत रखे मुट्ठियों को बांधे-लाल आँखों से एक-दूसरे को घूरा करें! बसंत के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहाकर लाल कर दिया जाय! नहीं-नहीं, चक्र मेरी समझ में मानव-जीवन का यही उद्देश्य नहीं है।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ग) कई-कई दिनों के लिए अपने को उससे काट लेती हूँ। पर धीरे-धीरे हर चीज़ फिर उसी ढर्रे पर लौट आती है। सब-कुछ फिर उसी तरह होने लगता है जब तक कि हम... जब तक कि हम नए सिरे से उसी खोह में नहीं पहुँच जाते। मैं यहाँ आती हूँ... यहाँ आती हूँ तो सिर्फ इसीलिए कि...

(घ) यह आत्महत्या होगी प्रतिध्वनित
इस पूरी संस्कृति में
दर्शन में, धर्म में, कलाओं में
शासन व्यवस्था में
आत्मघात होगा बस अंतिम लक्ष्य मानव का

(ङ) प्रेमी तो प्रेम कर चुका, उसका कोई प्रभाव प्रिय पर पड़े या न पड़े। उसके प्रेम में कोई कसर नहीं। प्रिय यदि उससे प्रेम करके उसकी आत्मा को तुष्ट नहीं करता तो उसमें उसका क्या दोष? तुष्टि का विधान न होने से प्रेम के स्वरूप की पूर्णता में कोई त्रुटि नहीं आ सकती।

2. 'अंधेर नगरी' नाटक के महत्त्व और प्रासंगिकता पर प्रकाश डालिए। **16**

3. रंगमंच और अभिनेयता की दृष्टि से 'स्कंदगुप्त' का मूल्यांकन कीजिए। **16**

4. 'आधे-अधूरे' की अंतर्वस्तु का विश्लेषण कीजिए। **16**

5. 'अंधायुग' में निहित राजनीतिक दृष्टि की सोदाहरण समीक्षा कीजिए। **16**

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

6. ललित निबंध की दृष्टि से 'कुटज' की विशेषताएँ बताइए। 16

7. 'ठकुरी बाबा' की चारित्रिक विशेषताओं का उल्लेख कीजिए। 16

8. संस्मरण विधा की विशेषताओं के आधार पर 'वसंत का अग्रदूत' की समीक्षा कीजिए। 16

9. आत्मकथा की विशिष्टता के आधार पर 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ?' का विवेचन कीजिए। 16

10. निम्नलिखित में से **किन्हीं दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : 2x8=16

(क) नुक्कड़ नाटक
(ख) 'अदम्य जीवन' की भाषा
(ग) 'धोखा' का कथ्य
(घ) ऑक्टवियो पाज़ से साक्षात्कार

ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

एम.एच.डी.-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम.ए. हिन्दी)

16091

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2019

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : *प्रथम प्रश्न अनिवार्य है । शेष प्रश्नों में से किन्हीं चार प्रश्नों के उत्तर दीजिए ।*

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ-सहित व्याख्या कीजिए : *3×12=36*

(क) संसार के समस्त अभावों को असंतोष कहकर हृदय को धोखा देता रहा । परंतु कैसी विडंबना ! लक्ष्मी के लालों को भ्रू-भंग और क्षोभ की ज्वाला के अतिरिक्त मिला क्या ! — एक काल्पनिक प्रशंसनीय जीवन, जो दूसरों की दया में अपना अस्तित्व रखता है ! संचित हृदय कोश के अमूल्य रत्नों की उदारता और दारिद्र्य का व्यंग्यात्मक कठोर अट्टहास, दोनों की विषमता की कौन-सी व्यवस्था होगी ।

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) हर-एक के पास एक-न-एक वजह होती है । इसने इसलिए कहा था । उसने उसलिए कहा था । मैं जानना चाहता हूँ कि मेरी क्या यही हैसियत है इस घर में कि जो सब जिस वजह से जो भी कह दे मैं चुपचाप सुन लिया करूँ ? हर वक्त की धतकार, हर वक्त की कोंच, बस यही कमाई है यहाँ मेरी इतने सालों की ?

(ग) आज मेरा विज्ञान सब मिथ्या ही सिद्ध हुआ ।
सहसा एक व्यक्ति
ऐसा आया जो सारे
नक्षत्रों की गति से भी ज़्यादा शक्तिशाली था ।
उसने रणभूमि में
विषादग्रस्त अर्जुन से कहा —
"मैं हूँ परात्पर ।
जो कहता हूँ करो
सत्य जीतेगा
मुझसे लो सत्य, मत डरो ।"

(घ) जीना भी एक कला है । लेकिन कला ही नहीं, तपस्या है । जियो तो प्राण ढाल दो ज़िन्दगी में, मन ढाल दो जीवनरस के उपकरणों में ! ठीक है । लेकिन क्यों ? क्या जीने के लिए जीना ही बड़ी बात है ? सारा संसार अपने मतलब के लिए ही तो जी रहा है । याज्ञवल्क्य बहुत बड़े ब्रह्मवादी ऋषि थे । उन्होंने अपनी पत्नी को विचित्र भाव से समझाने की कोशिश की कि सब कुछ स्वार्थ के लिए है ।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ङ) मैंने उनसे सहृदय व्यक्ति कम देखे हैं । यदि यह वृद्ध यहाँ न होकर हमारे बीच में होता, तो कैसे होता, यह प्रश्न भी मेरे मन में अनेक बार उठ चुका है, पर जीवन के अध्ययन ने मुझे बता दिया है कि इन दोनों समाजों का अंतर मिटा सकना सहज नहीं । उनका बाह्य जीवन दीन है और हमारा अंतर्जीवन रिक्त ।

2. 'अंधेर नगरी' की प्रासंगिकता पर एक निबंध लिखिए । *16*

3. 'आधे-अधूरे' की रंगमंचीयता पर विचार कीजिए । *16*

4. 'अंधायुग' के नाट्य शिल्प का विवेचन कीजिए । *16*

5. असंगत नाटक की विशेषताओं के संदर्भ में 'ताँबे के कीड़े' का मूल्यांकन कीजिए । *16*

6. 'कुटज' की अंतर्वस्तु पर विचार करते हुए उसकी भाषा-शैली की पड़ताल कीजिए । *16*

7. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' की संरचनात्मक विशेषताओं पर प्रकाश डालिए । *16*

8. 'वसंत का अग्रदूत' कविता के भावबोध पर प्रकाश डालिए । *16*

9. रिपोर्ताज विधा के आधार पर 'अदम्य जीवन' का विश्लेषण कीजिए । *16*

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

10. निम्नलिखित में से किन्हीं ***दो*** पर टिप्पणियाँ लिखिए : *2×8=16*

(क) 'लोभ और प्रीति' का प्रतिपाद्य

(ख) 'औरत' की रंग प्रस्तुति

(ग) 'कलम का सिपाही'

(घ) 'अंधायुग' का राजनीतिक संदर्भ

———

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 7

MHD-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

जून, 2020

एम. एच. डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : (*i*) **प्रथम** प्रश्न **अनिवार्य** है।

(*ii*) शेष प्रश्नों में से किन्हीं **चार** के उत्तर दीजिए।

P. T. O.

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

1. निम्नलिखित में से किन्हीं *तीन* की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : $3 \times 12 = 36$

(क) ऐसा जीवन तो विडम्बना है, जिसके लिए रात-दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद-शशि का विलास हो, तब भी दांत-पर-दांत रखे मुट्ठियों को बाँधे—लाल आँखों से एक दूसरे को घूरा करें! बसंत के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत गरम रक्त बहाकर लाल कर दिया जाय! नहीं-नहीं चक्र! मेरी समझ में मानव-जीवन का यही उद्देश्य नहीं है।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(ख) अगर मैं कुछ खास लोगों से सम्बन्ध बनाकर रखना चाहती हूँ तो अपने लिए नहीं, तुम लोगों के लिए। पर तुम लोग इससे छोटे होते हो, तो मैं छोड़ दूँगी कोशिश। हाँ, इतना कहकर कि मैं अकेले दम इस घर की जिम्मेदारियाँ नहीं उठाती रह सकती और एक आदमी है जो घर का सारा पैसा डुबोकर सालों से हाथ पर हाथ धरे बैठा है।

(ग) यह आत्महत्या होगी प्रतिध्वनित
इस पूरी संस्कृति में
दर्शन में, धर्म में, कलाओं में
शासन-व्यवस्था में
आत्मघात होगा बस अन्तिम लक्ष्य मानव का।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(घ) ये जो ठिंगने-से लेकिन शानदार दरख्त गर्मी की भयंकर मार खा-खाकर और भूख-प्यास की निरन्तर चोट सह-सहकर भी जी रहे हैं, इन्हें क्या कहूँ? सिर्फ जी ही नहीं रहे हैं, हँस भी रहे हैं। बेहया हैं क्या? या मस्तमौला हैं? कभी-कभी जो लोग ऊपर से बेहया दिखते हैं, उनकी जड़ें काफी गहरी पैठी रहती हैं। ये भी पाषाण की छाती फाड़कर न जाने किस अतल गह्वर से अपना भोग्य खींच लाते हैं।

(ङ) इस विचित्र सम्मेलन का कार्यक्रम भी वैसा ही अनोखा था। कोई भजन सुनाता, कोई पौराणिक कथाएँ कहता। कभी किवदन्तियों के नये भाष्य

ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

होते, कभी लोकचर्चा पर मौखिक टीकाएँ रची जातीं। कबीर की रहस्यमय उलटबाँसियों से लेकर अच्छा बैल खरीदने के व्यावहारिक नियम तक सब में उन ग्रामीणों की अच्छी गति थी, इसी से उनकी संगति न एक-रस जान पड़ती थी, न निरर्थक।

2. 'स्कंदगुप्त' के आधार पर प्रसाद की इतिहास दृष्टि का विवेचन कीजिए। 16

3. 'अंधायुग' की प्रासंगिकता पर विचार कीजिए। 16

4. एकांकी की दृष्टि से 'तांबे के कीड़े' की विशेषता बताइए। 16

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

5. 'धोखा' निबन्ध के प्रतिपाद्य पर विचार कीजिए। 16

6. व्यंग्य निबन्ध की विशेषताओं की दृष्टि से 'तीसरे दर्जे के श्रद्धेय' का मूल्यांकन कीजिए। 16

7. हिन्दी जीवनी साहित्य में 'कलम का सिपाही' की समीक्षा कीजिए। 16

8. मोहन राकेश के नाटक सम्बन्धी विचारों की पड़ताल कीजिए। 16

9. 'क्या भूलूँ क्या याद करूँ' के शिल्प पर विचार कीजिए। 16

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

10. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $8 \times 2 = 16$

(क) 'अंधायुग' की भाषा

(ख) 'संस्कृति और जातीयता'

(ग) 'औरत' का प्रतिपाद्य

(घ) भारतेन्दु की नाट्य सम्बन्धी दृष्टि

ignou ASSIGNMENT GURU
www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

No. of Printed Pages : 4

MHD-4

हिन्दी में स्नातकोत्तर उपाधि (एम. ए. हिन्दी)

(एम. एच. डी.)

सत्रांत परीक्षा

दिसम्बर, 2020

एम.एच.डी.-4 : नाटक और अन्य गद्य विधाएँ

समय : 3 घण्टे *अधिकतम अंक : 100*

नोट : **प्रथम** प्रश्न अनिवार्य है। शेष प्रश्नों में से किन्हीं ***चार*** प्रश्नों के उत्तर दीजिए।

1. निम्नलिखित में से किन्हीं ***तीन*** की सन्दर्भ सहित व्याख्या कीजिए : $3 \times 12 = 36$

(क) ऐसा जीवन तो विडंबना है, जिसके लिए रात-दिन लड़ना पड़े। आकाश में जब शीतल शुभ्र शरद-शशि का विलास हो, तब भी दाँत-पर-दाँत रखे मुट्ठियों को बाँधे-लाल आँखों से एक-दूसरे को घूरा करें। बसंत के मनोहर प्रभात में, निभृत कगारों में चुपचाप बहने वाली सरिताओं का स्रोत

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

गरम रक्त बहाकर लाल कर दिया जाय! नहीं, नहीं चक्र! मेरी समझ में मानव-जीवन का यही उद्देश्य नहीं है।

(ख) मैंने अपने ही वैयक्तिक संवेदन से जो जाना था
केवल उतना ही था मेरे लिए वस्तु-जगत्
इन्द्रजाल की माया-सृष्टि के समान
घने गहरे अँधियारे में
एक काले बिन्दु से
मेरे मन ने सारे भाव किए थे विकसित
मेरी सब वृत्तियाँ उसी से परिचालित थीं!
मेरा स्नेह, मेरी घृणा, मेरी नीति, मेरा धर्म
बिल्कुल मेरा ही वैयक्तिक था।

(ग) बादलों ने सूरज की हत्या कर दी, सूरज मर गया। मैं दूसरों का बोझ ढोता हूँ। मेरे रिक्शे में आईने लगे हैं। आईने में मैं अपना मुँह देखता हूँ। सूरज नहीं रहा। अब धरती पर आईनों का शासन होगा। आईने अब उगने और न उगने वाले बीज अलग-अलग कर देंगे।

www.ignouassignmentguru.com

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

(घ) विशिष्ट वस्तु या व्यक्ति के प्रति होने पर लोभ वह सात्विक रूप प्राप्त करता है जिसे प्रीति या प्रेम कहते हैं। जहाँ लोभ सामान्य या जाति के प्रति होता है वहाँ वह लोभ ही रहता है। पर जहाँ किसी जाति के एक ही विशेष व्यक्ति के प्रति होता है वहाँ वह 'रुचि' या 'प्रीति' का पद प्राप्त करता है। लोभ सामान्योन्मुख होता है और प्रेम विशेषोन्मुख।

(ङ) व्यक्ति की 'आत्मा' केवल व्यक्ति तक सीमित नहीं है, वह व्यापक है। अपने में सब और सबमें आप—इस प्रकार की एक समष्टि बुद्धि जब तक नहीं आती तब तक पूर्ण सुख का आनंद भी नहीं मिलता। अपने-आपको दलित द्राक्षा की भाँति निचोड़कर जब तक 'सर्व' के लिए निछावर नहीं कर दिया जाता तब तक 'स्वार्थ' खण्ड-सत्य है, वह मोह को बढ़ावा देता है।

ignou ASSIGNMENT GURU www.ignouassignmentguru.com

2. भाषिक प्रयोग की विशिष्टता की दृष्टि से 'अंधेर नगरी' का मूल्यांकन कीजिए। 16

Download More:- https://www.ignouassignmentguru.com/papers

3. 'स्कंदगुप्त' की चारित्रिक विशेषताओं का सोदाहरण विवेचन कीजिए। 16

4. 'अंधा युग' की संवाद योजना का विश्लेषण कीजिए। 16

5. मोहन राकेश के नाटकों का परिचय देते हुए 'आधे अधूरे' की प्रासंगिकता का आकलन कीजिए। 16

6. 'नुक्कड़' नाटक की विशेषताओं के परिप्रेक्ष्य में 'औरत' का मूल्यांकन कीजिए। 16

7. 'क्या भूलूँ, क्या याद करूँ' के संरचना शिल्प का विवेचन कीजिए। 16

8. हिन्दी जीवनी साहित्य में 'कलम का सिपाही' का महत्व प्रतिपादित कीजिए। 16

www.ignouassignmentguru.com

9. निम्नलिखित में से किन्हीं **दो** पर टिप्पणियाँ लिखिए : $2 \times 8 = 16$

(क) 'वसंत का अग्रदूत' की अंतर्वस्तु

(ख) ललित निबंध के रूप में 'कुटज'

(ग) 'साक्षात्कार' की लेखन शैली

(घ) प्रसाद की इतिहास दृष्टि